युवा और राजनीतिः राजनीति में युवाओं की भूमिका और देश के निर्माण में उनका योगदान

डॉ. शिवानी
(राजनीति शास्त्र विभाग)
D.A.V. Centenary College Faridabad

सारांश

देश की कुल आबादी में युवाओं की हिस्सेदारी 19.1% है, जो कुल आबादी का लगभग पाँचवाँ हिस्सा है। इसके अलावा, आँकड़े बताते हैं कि भारत की 65% आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। इसके बावजूद, भारत के केवल 6% नेता और मंत्री 35 वर्ष से कम आयु के हैं और उन्हें "युवा नेता" माना जा सकता है, जबकि मौजूदा लोकसभा में युवाओं का प्रतिनिधित्व केवल 12% है। ये आँकड़े चिंताजनक हैं, क्योंकि वे देश के राजनीतिक परिदृश्य में उत्साह, जुनून, ऊर्जा और नई प्रतिभा में एक महत्वपूर्ण अंतर को उजागर करते हैं। यह स्थिति एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठाती है: यदि भारत में युवा विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं, मील के पत्थर स्थापित कर रहे हैं और वैश्विक स्तर पर परिवर्तनकारी नेताओं के रूप में उभर रहे हैं, तो राजनीति में उनकी भागीदारी इतनी सीमित क्यों है? विचार करने पर, कई कारण सामने आते हैं। प्राथमिक कारक भारतीय राजनीति की वर्तमान स्थिति है, जो अक्सर भ्रष्टाचार, बेईमानी, कदाचार और धन और शक्ति पर अत्यधिक निर्भरता से जुड़ी होती है। इसके अलावा, भाई-भतीजावाद योग्यता और प्रतिभा को मात देता है, जिससे ऐसा माहौल बनता है जहाँ सक्षम युवा व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करने से हतोत्साहित और हतोत्साहित महसूस करते हैं।

नतीजतन, राजनीतिक व्यवस्था युवाओं की जीवंतता, नवीन सोच और क्षमता खो देती है। दिलचस्प बात यह है कि इस व्यवस्था को बदलने की कुंजी राजनीति में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने में निहित है। युवाओं के पास मौजूदा व्यवस्था की खामियों को समझने और बदलाव लाने की इच्छा और क्षमता रखने का अनूठा लाभ है। जब उनकी जागरूकता और जुनून को

प्रभावी ढंग से निर्देशित किया जाता है, तो इससे राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण सुधार हो सकते हैं, जिससे अंततः राष्ट्र को लाभ होता है।

राजनीति में युवाओं की सक्रिय भागीदारी कई कारणों से महत्वपूर्ण है। वे न केवल भविष्य के लिए एक नया, रचनात्मक दृष्टिकोण लेकर आते हैं, बल्कि अन्य क्षेत्रों में उनकी उपलब्धियाँ शासन में सकारात्मक बदलाव लाने की उनकी क्षमता को भी साबित करती हैं। युवा नेताओं की ऊर्जा और विचारों को अपनाकर, भारत एक अधिक गतिशील, पारदर्शी और प्रगतिशील राजनीतिक माहौल को बढ़ावा दे सकता है।

दूसरा, राजनीतिक व्यवस्था को युवा नेताओं की सख्त जरूरत है। आजादी के 77 साल बाद भी, हम राजनीति में वही पैटर्न और प्रथाएँ देखते हैं, जो दर्शाता है कि यह एक दोहराव वाले चक्र में फंसी हुई है। इस ठहराव ने बदलाव की तत्काल आवश्यकता पैदा कर दी है, और युवाओं की भागीदारी इस चक्र को तोड़ने में एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकती है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य खतरनाक ठहराव के बिंदु के करीब है, जिसका देश के विकास और प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसके अलावा, राजनीति में युवाओं की बढ़ती भागीदारी नेताओं और आम जनता के बीच संवाद की खाई को पाटने में मदद करेगी। चूँकि भारत की 65% आबादी युवा लोगों की है, इसलिए एक ही जनसांख्यिकी से नेताओं का होना बेहतर समझ और जुड़ाव को बढ़ावा देगा। यह न केवल संचार को अधिक प्रभावी बनाएगा बल्कि मतदाताओं और निर्वाचित लोगों के बीच संबंधों को भी मजबूत करेगा, यह सुनिश्चित करेगा कि लोगों की आवाज़ सुनी जाए और उनका अधिक सटीक रूप से प्रतिनिधित्व किया जाए।

मुख्य शब्द : युवा, राजनीति, भागीदारी

भारत एक विविधतापूर्ण राष्ट्र है, जिसमें क्षेत्रीय, धार्मिक और जाति-आधारित मतभेद हैं, जो शासन को एक जटिल और चुनौतीपूर्ण कार्य बनाते हैं। देश के विशाल चुनावी ढांचे को देखते हुए, प्रमुख नेतृत्व की भूमिकाओं में युवा राजनेताओं की अनुपस्थिति आश्चर्यजनक और चिंताजनक दोनों है। दुर्भाग्य से, युवा नेताओं को अक्सर दरकिनार कर दिया जाता है, प्रमुख पदों को लेने से हतोत्साहित किया जाता है, और ऐसे माहौल में उनकी छवि धूमिल हो जाती है, जो रचनात्मक आलोचना पर निर्विवाद श्रद्धा को महत्व देता है। यह माहौल धीरे-धीरे युवाओं में निराशा की भावना पैदा करता है, जिससे वे सक्रिय राजनीतिक जुड़ाव से विमुख हो जाते हैं।

इसके अलावा, राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश करने वाले अधिकांश युवा राजनेता अक्सर प्रभावशाली, अच्छी तरह से स्थापित परिवारों से आते हैं, जिनके पास पर्याप्त संसाधन और मजबूत राजनीतिक विरासत होती है। इसके लिए आलोचना का सामना करने के बावजूद, इनमें से कई युवा नेता राजनीति में युवाओं की अधिक भागीदारी के लिए सक्रिय रूप से वकालत करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने अपने स्वयं के राजनीतिक दलों की आलोचना करने में संकोच नहीं किया है, जिससे धीरे-धीरे लेकिन सकारात्मक बदलाव आया है, जिससे राजनीतिक परिदृश्य में युवाओं की भागीदारी बढ़ी है - भविष्य के लिए एक आशाजनक संकेत।

भारत को एक युवा राष्ट्र के रूप में गर्व से पहचाना जाता है, जिसकी लगभग 11% आबादी 25-30 आयु वर्ग में आती है, लेकिन संसद में इस जनसांख्यिकी का प्रतिनिधित्व एक अलग कहानी बयां करता है। 2019 की लोकसभा में, केवल 1.5% संसद सदस्य इस आयु वर्ग में थे। भले ही 2014 में युवाओं का प्रतिनिधित्व 8% से बढ़कर 17वीं लोकसभा में 12% हो गया हो, लेकिन यह अभी भी महत्वपूर्ण सवाल उठाता है: संसद में युवाओं का प्रतिनिधित्व इतना कम क्यों है? युवाओं को देश की राजनीतिक व्यवस्था में सक्रिय रूप से भाग लेने से क्या रोकता है? युवाओं की ऊर्जा और उत्साह में सार्थक प्रगति और राष्ट्रीय विकास को आगे बढ़ाने की अपार क्षमता है। इसका एक शानदार उदाहरण हिमाचल प्रदेश के थरजून की जबना चौहान हैं, जो 2016 में सिर्फ़ 22 साल की उम्र में भारत की सबसे कम उम्र की सरपंच बनीं। उनके नेतृत्व ने उनके गाँव में परिवर्तनकारी बदलाव लाए, जिसमें शराब और तंबाकू पर प्रतिबंध लगाना, प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली लागू करना और स्थानीय बुनियादी ढाँचे में सुधार करना शामिल है। उनके उल्लेखनीय प्रयासों के कारण उन्हें 'सर्वश्रेष्ठ सरपंच' का खिताब मिला और उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सम्मानित किया।

ऐसी प्रेरक कहानियाँ राजनीति में युवाओं की परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करती हैं, तथा भारत के भविष्य को आकार देने में युवा नेताओं के अधिक प्रतिनिधित्व और सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता को बल देती हैं।

ऐसी दुनिया में जहाँ हर चार में से एक व्यक्ति युवा है, लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के लिए इस गतिशील समूह की आकांक्षाओं को अपनाना और प्रतिबिंबित करना आवश्यक हो जाता है। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि मतदान अधिकार प्राप्त करने की वैश्विक औसत आयु 18 वर्ष है, जिससे युवाओं को राजनीतिक परिणामों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका मिलती

है। भारत में, युवा आबादी ने राष्ट्र के विकास के पीछे एक प्रेरक शक्ति के रूप में काम किया है। जैसा कि पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन ने सही कहा था, "युवा राष्ट्र के अग्रदूत हैं, जिन्हें अगर सही तरीके से निर्देशित किया जाए तो वे देश के विकास में मदद करेंगे।" युवाओं का प्रभाव तब और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जब नागरिक समाज संगठन, जो बदलाव के प्रमुख एजेंट हैं, युवाओं द्वारा नेतृत्व किए जाते हैं या उनमें युवाओं की सक्रिय भागीदारी होती है। आज की दुनिया में, जहाँ कई देश लोकतंत्रीकरण के दौर से गुजर रहे हैं, नागरिक समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और इसके साथ ही युवाओं से अधिक ज़िम्मेदारियाँ लेने की अपेक्षा भी की जाती है। वैश्विक स्तर पर युवाओं के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों को पहचानते हुए, संयुक्त राष्ट्र ने 2000 में 'युवाओं के लिए विश्व कार्यक्रम' की शुरुआत की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रों में युवाओं की स्थिति को बढ़ाना और सामाजिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उनकी पूर्ण और सार्थक भागीदारी को बढ़ावा देना है। एलेक्सिस डी टोकेविले जैसे विचारकों ने शासन में युवाओं की भागीदारी के महत्व पर जोर दिया है, जिन्होंने भागीदारीपूर्ण शासन के लिए एक मंच के रूप में नागरिक समाज की भूमिका पर प्रकाश डाला। इसके बावजूद, औपचारिक सरकारी प्रक्रियाओं में शामिल युवाओं की वास्तविक संख्या चिंताजनक रूप से कम है। उदाहरण के लिए, भारत में, केवल 25% कॉलेज छात्र छात्र नेता बनने में रुचि व्यक्त करते हैं, और युवाओं के बीच मतदान का औसत केवल 30-40% है। ये आंकड़े युवा प्रतिनिधित्व और राजनीतिक भागीदारी में एक महत्वपूर्ण अंतर की ओर इशारा करते हैं। भागीदारी की यह कमी विशेष रूप से ऐसे युग में चिंताजनक है जहां सामाजिक-राजनीतिक चर्चाएँ डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर स्थानांतरित हो गई हैं, और अधिक व्यापक और सुलभ हो गई हैं। दिलचस्प बात यह है कि वैश्विक स्तर पर हर पांच में से चार फेसबुक उपयोगकर्ता 18 से 29 वर्ष की आयु के हैं, और 18 वर्ष और उससे अधिक आयु के वयस्कों के बीच इंटरनेट उपयोग में 2009 में 74% की वृद्धि देखी गई। डिजिटल कनेक्टिविटी में यह उछाल नागरिक और राजनीतिक गतिविधियों में युवाओं की अधिक भागीदारी की क्षमता और आवश्यकता दोनों को उजागर करता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि भविष्य को आकार देने में उनकी आवाज सुनी जाए।

भारतीय युवा तेजी से आबादी के एक जिम्मेदार और सक्रिय वर्ग के रूप में उभर रहे हैं, जो शासन में बदलाव लाने के लिए उत्सुक हैं। वे अपनी राय व्यक्त करने और परिणामों की परवाह किए बिना अपने विश्वासों पर अड़े रहने से नहीं डरते। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि वे राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी को पहचानते हैं और समझते हैं कि वास्तविक परिवर्तन उनके

हाथों में है। वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए, युवाओं को भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। यदि उन्हें सही अवसर और स्वतंत्रता प्रदान की जाती है, तो वे देश के कामकाज के तरीके को बदलने की क्षमता रखते हैं। यहाँ बताया गया है कि कैसे:

- निर्णय लेना - हालाँकि युवाओ को अक्सर आवेगी माना जाता है, युवा लोग समझदारी और तर्कसंगत निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं, खासकर महत्वपूर्ण परिस्थितियों में। उनके पास भावनात्मक रूप से खुद को अलग करने और वस्तुनिष्ठ, तीसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण से स्थितियों का आकलन करने की एक अनूठी क्षमता है। उनका साहस उन्हें तत्काल परिणामों के डर के बिना साहसिक कदम उठाने की अनुमति देता है, जब तक कि वे अपने विकल्पों में आश्वस्त हों। इसके अलावा, उनका जुनून उन्हें व्यक्तिगत हितों से परे सोचने के लिए प्रेरित करता है, जो पूरे देश के लिए लाभकारी है। समस्या-समाधान के प्रति उनका अपरंपरागत दृष्टिकोण पुराने दृष्टिकोणों को चुनौती देता है, तथा निर्णय लेने में तार्किक और प्रगतिशील सोच को बढ़ावा देता है।
- अभियानों में भागीदारी - राजनीतिक अभियानों में युवाओं की भागीदारी देश के लिए एक बड़ा परिवर्तनकारी कदम हो सकती है। अपने अभिनव विचारों, नए दृष्टिकोणों और निडर रवैये के साथ, युवा व्यक्तियों में सार्थक परिवर्तन लाने की क्षमता है। कई मौजूदा नेताओं के विपरीत, वे अधिक अनुकूलनीय हैं और शासन के नए तरीकों के लिए खुले हैं। यदि उन्हें नेतृत्व करने का अवसर दिया जाए, तो वे राजनीति में एक बहुत जरूरी परिवर्तन ला सकते हैं। इसके अतिरिक्त, समान विचारधारा वाले, प्रगतिशील व्यक्तियों के नेतृत्व वाली सरकार नेतृत्व और जनता के बीच न्यूनतम संघर्ष सुनिश्चित करेगी, जिससे एक अधिक एकीकृत और समृद्ध राष्ट्र का मार्ग प्रशस्त होगा।
- मतदान शक्ति - युवा भारतीय लोकतंत्र को प्रभावित करने के सबसे महत्वपूर्ण तरीकों में से एक है चुनावों में सक्रिय रूप से भाग लेना। उनके पास अपार मतदान शक्ति है, प्रत्येक आम चुनाव में वोटों का एक बड़ा हिस्सा युवा मतदाताओं से आता है, जिनमें कई पहली बार भाग लेने वाले प्रतिभागी भी शामिल हैं। अकेले 2014 में, 15 करोड़ नए मतदाता चुनावी सूची में जोड़े गए। इन संख्याओं की ताकत, युवाओं की निर्णय लेने की क्षमताओं के साथ मिलकर, भारतीय लोकतंत्र के भविष्य को फिर से परिभाषित कर सकती है। अगर वे अपनी शक्ति को पूरी तरह से पहचान लें, तो वे देश को शासन के एक नए युग की ओर ले जा सकते हैं।

- सोशल मीडिया का प्रभाव - आधुनिक युग में, सोशल मीडिया भारतीय लोकतंत्र का एक अभिन्न अंग बन गया है, जो राजनीतिक विमर्श के लिए एक शक्तिशाली मंच के रूप में कार्य करता है। नेता इन प्लेटफार्मों का उपयोग अपनी सार्वजनिक छवि बनाने और पेश करने के लिए करते हैं, जिससे मतदाताओं को उनकी क्षमताओं का आकलन करने में मदद मिलती है। इसी तरह, युवा लोग राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों पर अपनी राय सक्रिय रूप से व्यक्त करते हैं, जनता की धारणा को आकार देते हैं और चुनाव परिणामों को प्रभावित करते हैं। युवाओं की आवाज़ को बढ़ाने की सोशल मीडिया की क्षमता इसे राजनीतिक जागरूकता को बढ़ावा देने और शासन में अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए एक आवश्यक उपकरण बनाती है।

इन भूमिकाओं को अपनाकर, युवा भारतीय लोकतंत्र में परिवर्तनकारी बदलाव ला सकते हैं, जिससे एक अधिक प्रगतिशील, पारदर्शी और गतिशील राजनीतिक प्रणाली सुनिश्चित हो सके।

निष्कर्ष :

अगर युवा अपनी क्षमता का पूरा उपयोग करना शुरू कर दें, तो वे भारतीय लोकतंत्र को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं और यहां तक कि उसे नया आकार भी दे सकते हैं। मौजूदा पीढ़ी पहले से ही मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था से निराश है, इसकी सीमाओं, अक्षमताओं और निर्णायक कार्रवाई की कमी से निराश है। हालांकि, जब सही समय आएगा, तो युवा दृढ़ संकल्प के साथ उठ खड़े होंगे और भारतीय राजनीति में एक नया युग लाने के अपने प्रयासों में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

बदलाव की यह लहर न केवल देश के भीतर राजनीतिक परिदृश्य को फिर से परिभाषित करेगी, बल्कि दुनिया के भारत को देखने के तरीके को भी बदल देगी। यह नए नेतृत्व का मार्ग प्रशस्त करेगी, अधिक राजनीतिक स्थिरता को बढ़ावा देगी और भारतीय लोकतंत्र में एक ताज़ा, प्रगतिशील बदलाव लाएगी - जो देश के युवाओं की ऊर्जा, जुनून और दूरदर्शिता से प्रेरित है।

संदर्भ :

1. *The change, India needs* (2019) *Youth In Politics - Blog*. Available at: https://www.youthinpolitics.in/blog/the-change-india-needs/.

2. *Bringing youth into politics* (2019) *Youth In Politics - Blog*. Available at: https://www.youthinpolitics.in/blog/bringing-youth-into-politics/.
3. *Youth in politics is a new dawn* (2019) *Youth In Politics - Blog*. Available at: https://www.youthinpolitics.in/blog/youth-in-politics-is-the-new-dawn/.
4. Nandini *et al.* (2015) *Nandini, Indian Youth*. Available at: https://www.indianyouth.net/role-of-youth-in-indian-democracy/.
5. Media&PRhttps://www.cppr.in/author/webadmin, C. (2019) *The role of youth in strengthening civil society in India, Centre for Public Policy Research (CPPR)*. Available at: https://www.cppr.in/articles/the-role-of-youth-in-strengthening-civil-society-in-india#.